मृच्छकटिक में वर्णित तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियाँ

चन्द्रप्रभा कुमारी

डॉ० अरविन्द कुमार

मृच्छकटिक प्रकरण महाकवि शूद्रक की एक अनुपम कृति है। इस प्रकरण में महाकवि शूद्रक ने तत्कालीन सामाजिकता के विभिन्न पहलुओं का अविकल चित्रण किया है। यहाँ तत्कालीन जनजीवन के एक ऐसे पक्ष का वर्णन किया गया है जो बहुत ही साहसमय तथा प्रगतिशील है और उस युग के धर्म, अर्थ, समाज तंत्र आदि के लिए एक महान चुनौती है। उस समय समाज छिन्न भिन्न थी। संस्कृति प्रायः लुप्त हो रही थी। जाति व्यवस्था कठोर हो चली थी। जन्म से जाति मानी जाती थी और जातिगत अभिमान भी उत्पन्न हो गया था। इन सबका एक विशिष्ट झलक वीरक और चन्दक के विवाद में प्राप्त होती है। सम्भवतः धर्म के प्रभाव के कारण कभी कभी जाति की अपेक्षा मानव गुण को भी वरीयता दी जाती थी।